सच्चे नागरिकों से ही सत्धर्म की अपेक्षा की जा सकती है। मनुष्यों की बेईमानी असत्य को जिताती है, लेकिन सत्य मार्ग पर चलने वाले पराजित हुए मनुष्य को अपनी हार का दुःख नहीं होता। बदलता समय उसे देर-सवेर भी न्याय देता ही है। युद्ध में विजयी बनने से बड़ा विजय है, आत्मविजय!

विजयी ही रहें... अहंकारी नहीं !!!

खेल की स्पर्धा में जाने वाला एक विद्यार्थी अपने माता-पिता को कहता है कि मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मैं किसी भी तरह विजयी हो जाऊँ।

माँ तो चुप रही, लेकिन पिता ने कहाः 'ना, पुत्र, मैं तुझे किसी भी भोग से जीतने का आशीर्वाद नहीं दूंगा। मेरा तुझे आशीर्वाद है कि तू अपने सच्चे और सत्यनिष्ठ पराक्रम से विजेता बन। तूने जितनी साधना की है, उतना ही फल तुझे मिले।'

पिता की बात पुत्र के गले नहीं उतरी। वो चाहता था कि विजय मतलब विजय। विजेता का मूल और कुल कोई पूछता नहीं, लेकिन विजय का हार पहनाने के लिए उत्सुक होते हैं। कितने सारे पराजय की खाई में गिरने लायक लोग विजयी बन जाते हैं। विजय की भावना की ज़िन्दादिली का खात्मा हो जाता है। इसीलिए मनुष्य अहंकारी बनता है। आज जीत जाने पर भी, जीत पचाने में नाकामयाब रहने वालों की संख्या दिनों दिन बढ़ती जा रही है। पूर्व में सत्याग्रही अपनी नहीं, लेकिन सत्य की विजय हो, ऐसी इच्छा रखते थे। जबकि आज तो सत्याग्रह के नाम से स्वार्थ की विजय हो, यही सिद्धि मान लेते हैं। 'मैं झूठी तरह से जीतूं, उससे तो अच्छा ये कि खुमारी पूर्वक लड़ते-लड़ते हारूँ, यही मेरी जीत है।' ऐसी प्रतिज्ञा हरेक स्पर्धा करने वाले उम्मीदवार को करनी चाहिए। मूल्य दिये बिना जीतने का प्रयत्न करने वाले, विजय के दरबार में भिखारी हैं। आज षड्यंत्रों के द्वारा परीक्षा दिये बिना ही सफल होने के चस्के दिनों दिन बहुत बढ़ते जा रहे हैं। मनुष्य को आज साधना और श्रम कर लम्बे अर्से में विजय मिलने में रस नहीं है, लेकिन किसी भी तरह से टेम्प्ररी विजय मिलती हो, तो उन्हें उसे जीवन में अग्रिम स्थान देने में रस है। मनुष्य का झण्डा ऊँचा रहे, नहीं, लेकिन सत्य और सदाचार और मानवता का झण्डा ऊँचा रहे, उसमें ही मनुष्य के धर्म की शान छुपी हुई है। शायर नाशाद ने उचित ही कहा है...

'हज़ारों जीते, हज़ारों हारे, अजब दुनिया की कश्मकश है, जो देखा नाशाद वक्त बाकी, न जीत बाकी, न हार बाकी।'

बहुत बार ऐसी दलील दी जाती है कि सत्यवादी हारते हैं और प्रपंची जीत जाते हैं। सच्चे नागरिकों से ही सत्धर्म की अपेक्षा की जा सकती है। मनुष्यों की बेईमानी असत्य को जिताती है, लेकिन सत्य मार्ग पर चलने वाले पराजित हुए मनुष्य को अपनी हार का दुःख नहीं होता। बदलता समय उसे देर-सवेर भी न्याय देता ही है। युद्ध में विजयी बनने से बड़ा विजय है, आत्मविजय! जब लोगों की विवेक दृष्टि मारी जाती है, तब वो साधारणता में महानता का दर्शन करता है। विजय, ये आत्मविश्वास मांगता है। इमर्सन ने कहा है कि मैं प्रत्येक वक्त हारा हूँ, फिर भी विजय के लिए जन्मा हूँ।

मनुष्य बाहर से पराजय का डर रख अंदर हार स्वीकार कर बैठ जाता है। बहुत बार मनुष्य बाहर से जीतता है, लेकिन उसकी अंतरात्मा को मालूम होता है कि कैसे अनुचित मार्ग अपनाकर उसे जीत मिली है। भयंकर युद्ध में हज़ारों दुर्जय शत्रुओं को जीतने से ज़्यादा खुद पर विजय सबसे बड़ा विजय है।

एक नीति कथा में दर्शाये अनुसार जब राम ने राक्षस राजा रावण को पुत्र सहित उसकी सेना का संहार किया, तब रावण का भाई विभीषण श्रीराम के पास जाकर कहने लगा : 'रावण अपने अहंकार के सामने किसी को कुछ नहीं समझता था। रावण जैसे शक्तिशाली और अभिमानी को हराकर आपने बहुत श्रेष्ठ काम किया है।' लेकिन श्रीराम ने ऐसे विजय को एक साधारण कार्य कहते हुए विभीषण को कहा : 'हे बन्धु विभीषण, रावण पर विजयी होना कोई बड़ी विजय नहीं है। हकीकत में सही विजय तो ये है कि दुर्गुणों रूपी सांसारिक दोषों को जीत सकें। सच्चा विजय तो यह है कि मनुष्य धर्ममय रथ में बैठकर दुर्गुणों और व्यसनों पर विजय प्राप्त करे। दुराचारी तो देर-सवेर पराजित होता ही है। रावण खुद के दुर्गुणों से ही पराजित हुआ।' रामचन्द्र पहले भी विभीषण को कहा करते थे कि मात्र काष्ठनिर्मित रथ पर सवार होकर अस्त्र-शस्त्र की ताकत से विजय प्राप्त नहीं होती। असली विजय के लिए धर्ममय रथ चाहिए। शॉर्य और धैर्य, ये धर्मरथ के पहिये हैं। विजय के लिए सबसे बड़ी शक्ति सत्यता होनी चाहिए। शूरवीरता, सत्याचरण से ही प्राप्त होती है। सत्य, दया, विवेक, संयम आदि ऐसे सद्गुण हैं, जिन्हें धारण करने वाले हमेशा अजेय रहते हैं। उनसे कोई जीत नहीं सकता।

विजय, स्वतंत्रता के असीम आनंद की छूट नहीं देता, लेकिन स्वाधीन रहकर संयम पूर्वक आचरण करने की आपसे मांग करता है।

विजय, स्वतंत्रता के असीम आनंद की छूट नहीं देता, लेकिन स्वाधीन रहकर संयम पूर्वक आचरण करने की आपसे मांग करता है।

विजय के लिए पाँच बातें:

* बहादुरी पूर्वक विजय के लिए कूद पड़िये, लेकिन आत्मविश्वास को शिथिल ना बनाइये।
* जीतने का लक्ष्य बनाइये, लेकिन उसके साधन, सत्य और धैर्य की उपेक्षा न करिये।
* असत्य को जीतते देख कभी उहापोह में न आ जायें, समय मनुष्य के सर्व कर्मों का साक्षी है।
* पारिवारिक जीवन या राजकीय जीवन में खेलदिली से न चूंकें।
* विजय मिले, अहंकारी न बनें। विजयी दानव से बढ़िया है चरित्रवान मानव बनना।

प्रेम

प्रेम कुरूपता के बंधन में नहीं बंधता। प्रेम निश्छल और निरंतर बहने वाली ऊर्जा का नाम है। तभी तो कहते हैं बाल गोपाल, अर्थात् बच्चे परमात्मा का रूप हैं और वो उनमें ही दिखाई पड़ता है। जैसे जैसे वो बड़ा होता, तब हम उसे निश्छल प्रेम के विरूद्ध आकार देते हैं और वो प्रेम धीरे धीरे समाप्त हो जाता है। तो प्रेम को देखना व समझना हो, तो नन्हें बच्चे को देखें, जहाँ उनकी भाषा ही प्रेम है। बस! प्रेम के अलावा और कुछ नहीं। बाकी तो सब जगह मिलावट ही मिलेगी।

हर बच्चा पैदा होता है प्रेम को लेकर, इसीलिए तो हर बच्चा प्यारा लगता है। हर बच्चा प्यारा लगता है, हर बच्चा सुंदर है। आपने कभी कोई कुरूप बच्चा देखा है? बच्चे का सौंदर्य जैसे उसके शरीर पर निर्भर नहीं है। बल्कि उसकी भीतरी क्षमता पर बच्चे का दिया जल रहा है।

अभी उसके रोम-रोम से चारो तरफ प्रेम की रोशनी पड़ती है। अभी वह जिस तरफ देखता है वहीं प्रेम है। पर जैसे जैसे वह बड़ा होगा, वैसे वैसे प्रेम खोने लगेगा। हम ही सहायता करते हैं कि प्रेम खो जाए। उसे हम प्रेम करना नहीं सिखाते, प्रेम से सावधान रहना सिखाते हैं : क्योंकि प्रेम बड़ा खतरनाक है।

हम बच्चे को सिखाते हैं संदेह करना, क्योंकि इस दुनिया में संदेह की ज़रूरत है, नहीं तो लोग लूट लेंगे। धोखाधड़ी है, बहुत बेईमानी है, प्रपंच है। अगर तुम संदेह न कर सके, तो कोई भी तुम्हें लूट लेगा। चारो तरफ लुटेरे हैं। हम चारो तरफ से परमात्मा का ध्यान नहीं रखते, हम चारो तरफ के लुटेरों का ध्यान रखते हैं और हम लुटेरों के लिए तैयार करते हैं बच्चों को। यदि लुटेरों के लिए तैयार करना हो, तो प्रेम नहीं सिखाया जा सकता क्योंकि प्रेम खतरनाक है।

प्रेम का अर्थ है : भरोसा। प्रेम का अर्थ है : श्रद्धा। प्रेम का अर्थ है : स्वीकार। संदेह का अर्थ है : होश रखो, कोई लूट न ले, बचाओ अपने को, सदा तत्पर रहो, आक्रमण होने को है कहीं न कहीं से और इसके पहले कि आक्रमण हो, तुम खुद आक्रमण कर दो, क्योंकि वही रक्षा का सबसे उचित उपाय है। तो प्रतिपल जैसे संतरी पहरे पर खड़ा हो ऐसे हम बच्चों को तैयार करते हैं।

तभी हम बच्चे को कहते हैं कि प्रौढ़ हुआ। जब उसकी प्रेम की क्षमता पूरी खो जाती है, जब वह चारो तरफ शत्रु को देखने लगता है। मित्र उसे कहीं भी दिखाई नहीं पड़ता, जब वह अपने आप पर भी संदेह करता है तभी हम समझ पाते हैं कि अब यह योग्य हुआ, दुनिया में जाने योग्य हुआ। अब बचपना न रहा, अब इसे कोई धोखा न दे सकेगा। अब यह दूसरों को धोखा देगा।

कबीर ने कहा है कि तुम धोखा खा लो, लेकिन धोखा मत देना, क्योंकि धोखा खा लेन से कुछ भी नहीं खोता है। धोखा देने से सबकुछ खो जाता है। किस सबकुछ की बात करते हैं कबीर?

जैसे-जैसे तुम धोखा देते हो वैसे-वैसे तुम्हारे प्रेम की क्षमता खो जाती है। कैसे तुम प्रेम करोगे, अगर तुम धोखा देते हो और अगर तुम डरे हो तो भय तो ज़हर है, प्रेम का फूल खिल न पायेगा। अगर तुम डरे हुए हो तो प्रेम कैसे करोगे? भय से कहीं प्रेम उपजा है? भय से तो घृणा उपजती है। भय से तो शत्रुता उपजती है। भय से तो तुम अपनी सुरक्षा में लग जाते हो।

पूरा जीवन जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है, वैसे-वैसे सुरक्षा करता है : धन से, मकान से, व्यवस्था से, सब तरफ से इंतज़ाम करता है कि कहीं से कोई हमला न हो जाए। लेकिन इसी इंतज़ाम में हम भूल जाते हैं कि सब द्वार बंद हो जाते हैं और प्रेम के आने का रास्ता भी अवरूद्ध हो जाता है। सुरक्षा पूरी हो जाती है, लेकिन सुरक्षा कब्र बन जाती है और प्रेम समाप्त हो जाता है।

चन्द्रपुर-महा.। श्री साईं नगरी सहकारी पथ संस्था द्वारा आयोजित रक्त दान शिविर में गृह राज्यमंत्री हंसराज अहिर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कुन्दा। साथ हैं पूर्व राज्यमंत्री संजय देवताले, जिला पंचायत सदस्य प्रवीणभाऊ सुर तथा अन्य।

रेवाड़ी-हरियाणा। पूर्व मंत्री कप्तान अजय यादव को ईश्वरीय सौगात व प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. कमलेश। साथ हैं ब्र.कु. रामा सिंह।

लोहरदगा-झारखण्ड। योग कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए सी.आर.पी.एफ 158 बटालियन के द्वितियक कमाण्डेंट राजेश चौहान। साथ हैं डेप्युटी कमांडेंट सुरेश उराँव, ब्र.कु. बहनें व अन्य।

श्रीगंगानगर-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ के सिक्योरिटी सर्विस विंग द्वारा पुलिसकर्मियों के लिए आयोजित 'इरेडिक्शन ऑफ स्ट्रेस एंड इनहेन्सिंग इनर स्ट्रेन्थ' विषयक कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए कमाण्डर शिव, डॉ. दिलीप पनवेल, ब्र.कु. विजया, आई.पी.एस. हरेन्द्र कुमार तथा डी.एस.पी. सुरेन्द्र सिंह राठौड़।

जालोर-राज.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा मूक-बधीर स्कूल के दिव्यांग बच्चों को थ्री.डी. चित्र प्रदर्शनी तथा ब्रेल लिपि में छपे ईश्वरीय संदेशों के माध्यम से आध्यात्मिक संदेश देते हुए ब्र.कु. सूर्यमणि,थ्री.डी. चित्र एवं ब्रेल लिपि विशेषज्ञ,माउण्ट आबू। साथ हैं सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु. रन्जू।

मलकापुर-महा.। सर्कस में ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सर्कस हेड संकपाळ जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. वंदना, ब्र.कु.वर्षा तथा उज्वला बहन।